आपातकाल में सृजन फुलवारी

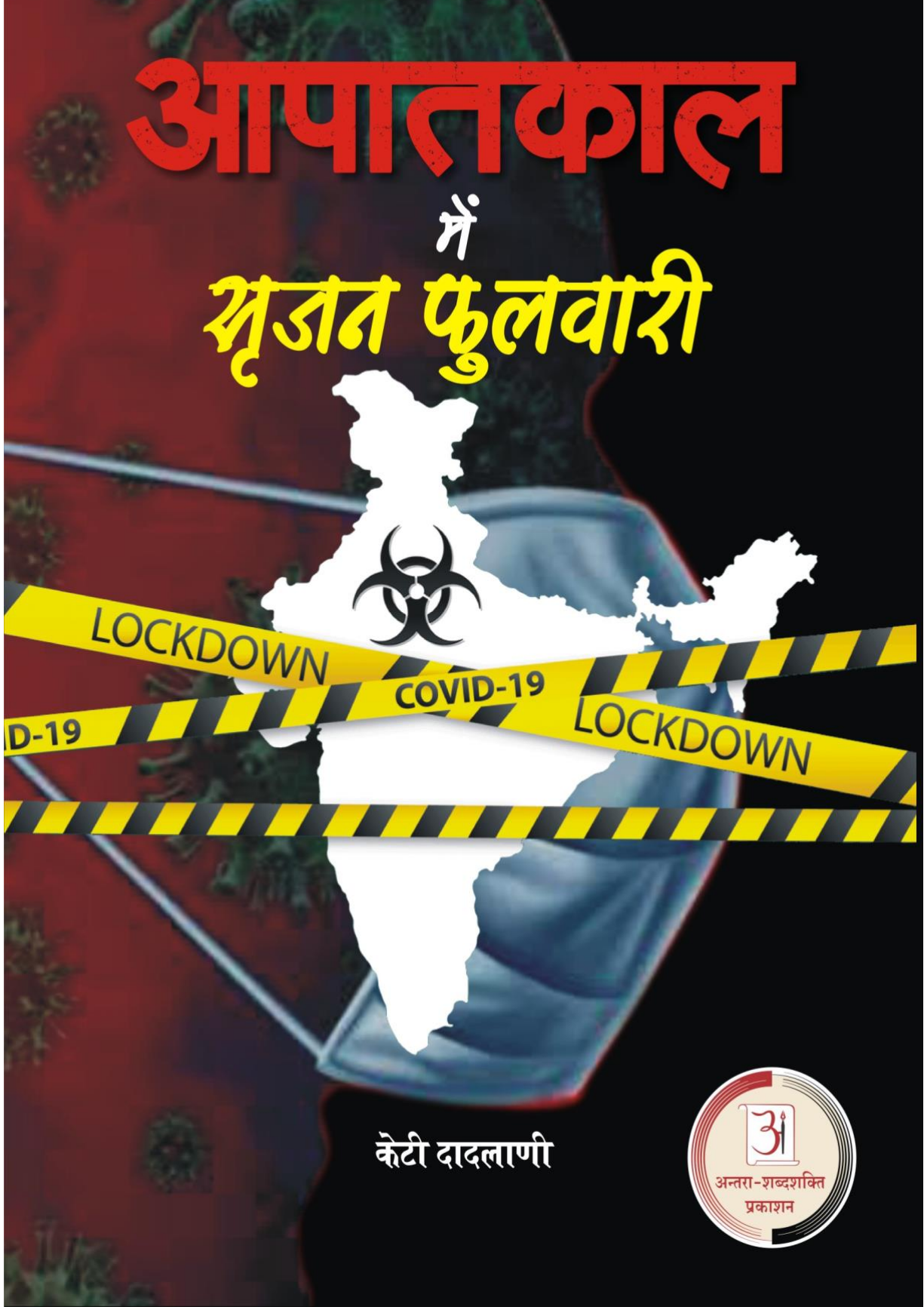

केटी दादलाणी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

केटी दादलानी

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-191-6

संपादक- **डॉ.** प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र-संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय-15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण-2020, केटी दादलानी
मूल्य-50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY K T DADLANI

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	न जाओ दूर	6
2.	मां	7
3.	जोगी	8
4.	घायल लगती है	9
5.	मन बेचारा सिमट गया	10
6.	सुख दुख हैं जीवन	11
7.	सपने	12
8.	रात कटे ना दिन ढलते हैं	13
9.	मन सबका ही डर जाएगा	14
10.	अंतर का अवलोकन	15
11.	तोहमतें	16
12.	नारी	17
13.	कान्हा	18
14.	वात्सलय	19
15.	संस्कृति	20

न जाओ दूर

न जाओ दूर आओ पास तो ये दिल संभल जाये
अगर तुम लौट आओ तो वही ख़ुशबू बिखर जाये

ज़माना आज चलता है अंधेरी राह पर गुमसुम
कदम ऐसे बढ़ाओ राह गुलशन सी संवर जाये

चलेंगे साथ सारे बस नियम हो साफ सुथरे ही
बने सिद्धांत जीवन के बुराई डूब मर जाये

मिला है सारथी ऐसा निभाना साथ जीवन भर
अश्वमेध यज्ञ जीतने का ही निराला आ हुनर जाये

तुम्हारे पांव कांटो पर चले चढ़ लो पहाड़ों पर
विजय विश्वास की है आज कुंठा से उबर जाये

इरादा पार जाने का किया है अब नहीं रुकना
धराशायी घिनौनी चाल चकनाचूर हो जाये

मां

माता के पावन चरण छुहे
पावन मेरा ही हस्त हुआ
फेरा सर पर हाथ दया का
दुख का हर कोना पस्त हुआ

मेरा सर माता चरणों में
सुख की छाया में बसता है
माता की बलिहारी जाऊं
जीवन कंचन सा लगता है
हर पथ ऐसा प्रशस्त हुआ

जब संशय की उलझन होती
तेरा सिमरन पथ दिखलाता
ममता की आशीश मिली जब
संकट पल में ही टल जाता
अंधेरों का भी अस्त हुआ

आस यही है इस जीवन की
गोद सदैव तुम्हारी पाऊं
और नहीं इस मन की इच्छा
प्यार तुम्हारा हर युग पाऊं
है मन ऐसा आसक्त हुआ

जोगी

मन जपता नित तेरी माला
मिलती है पावन शीतलता
मीत निभाना प्यार सदा ही
मिट जाए मन की व्याकुलता

मन दर्पण में हो तुम बसते
सांसो में बस जाप तुम्हारा
आनंदमय है जीवन ऐसा
तिनका लाया पास किनारा
ऐसी भायी है कोमलता

आशा है अब आस फलेगी
प्रतीक्षा में है सुख छाया
स्वर स्नेह सुनेगा मन अब
प्रेम रंग में रम गई काया
वाणी में बसती निर्मलता

सांझ चली है तजके दिन को
उजियारा चंदा का फैला
तारों की टिमटिम लगती है
जीवन का हो जैसे मेला
मन को भाती है चंचलता

त्यागी जब तृष्नाएं सारी
मन के अंदर स्वर्ग बन गया
पल पल पाया प्यार तुम्हारा
जोगी बन संसार सज गया
दीप निरंतर सुख का जलता

घायल लगती है

आज ज़माना बदल गया है, मिलती नहीं मनुहार की भाषा
तीर चलाती चिकनी बातें, घायल लगती है हर आशा

आज शंकाएं पनप रहीं हैं
विश्वास पनाहें मांग रहा
डोल रहा मन मानस का भी
है चोंच लगाता कांग रहा
मिट गई है हर अभिलाषा, घायल लगती है.....

प्यार चला बनवासी बनके
नफरत फैली अब हर दिल में
दिन को ही रात बना डाला
घुप अंधेरा है तिल तिल में
दुनिया बन गई एक तमाशा, घायल लगती है.....

गलत सही की बहस चली है
भटक रहे हो सीधे पथ से
धर्म सनातन ही है अपना
टपक रहे हो कैसी छत से
छोड़ो बेईमान हताशा, घायल लगती है.....

विश्वास जगा लो बस मन में
मित्थक सारे कष्ट बनेंगे
कदम सुगमता पा ही लेंगे
बीज लगेंगे लक्ष्य सधेंगे
जीवन की है ये परिभाषा, घायल लगती है.....

मन बेचारा सिमट गया

भीगा आँचल सजनी का
सीने से जो लिपट गया
नैन नशे में डूब गये
मन बेचारा सिमट गया

रस्ता रोक रही नज़रें
अब कैसी मैं राह चलूं
रुकती चलती हैं सांसें
कैसे अब अंतर को छलूं

सांस रटन बस नाम तेरा
है कैसा जादू छाया
भाती आज उदासी भी
जीवन है कैसी माया

छोड़ो दुनिया की बातें
मन ऐसे मत उलझाओ
हरपल दिल के पास रहो
प्यार जहां में खो जाओ

जादू तेरे नैनों में
प्यार समंदर गहरा है
जाम छलकते होठों पे
दिल पर मेरे पहरा है

सुख दुख हैं जीवन

स्वस्थ रखें सब सोच को अपनी, तेरा मेरा छोड़ें
सुख दुख हैं जीवन के साथी, आज दिलों को जोड़ें

तृष्णाओं का त्याग करें बस, प्रेम का दामन थामे
हो जाएंगी निश्चित सबकी, रंगीं सुबहो शामें
जीवन में सच्चाई का बस, ध्वज धरा पर खोड़ें
सुख दुख हैं जीवन.....

राम कृष्ण मुहम्मद ने सिखाये, जीवन के सलीखे
ईसा नानक बुद्ध दे गये, पावनता के झरोखे
जन्म भूमि ही जन्नत है, कटुता के बन्धन तोड़ें
सुख दुख हैं जीवन .....

मानव के गुणों का तो, कोई पार नहीं है
मालिक की ही कृपा है, किसका उपकार नहीं है
दृढ़ रखें विश्वास अंतर में, समय की धारा मोड़ें
सुख दुख हैं जीवन.....

सपने

शौक सदा पाले रहते हैं
पागल बन सपने बुनते हैं

होता वक्त बड़ा उपयोगी
ख़्याल नहीं कोई करते हैं
ऐसे कैसे काम चलेगा
ख़ुद का ही दामन भरते हैं

भूले पावन धरती को ही
पोले स्वार्थों में उड़ते हैं
नमन नहीं है नज़रों में ही
आड़े टेढ़े ही चलते हैं

सोच बनी ऐसी बनवासी
जी भरकर चारा चरते हैं
कौन विवाद करेगा कैसे
शस्त्र सदा ही संग रखते हैं

एक लहर ऐसी आई जो
भागे भागे अब फिरते है
अंत हुआ है अभिमानों का
कोरोना से सब डरते हैं

रात कटे ना दिन ढलते हैं

रात कटे ना दिन ढलते हैं
अरमां आंखों में जलते हैं
नींद नहीं आती नैनों में
बीज चुभन के ही फलते हैं

अब जीवन कैसे गुज़रेगा
ख़्वाबों में आकर खलते हैं
प्रतीक्षा में पागल है मन
सब्र सदा मन को छलते हैं

आस़ सताती ही रहती है
तेरे दर्स सदा टलते हैं
किस्मत ऐसी है बंदे की
खाली हाथ सदा मलते हैं

पंछी की परवाज़ कभी थी
शूलों पर ही अब चलते हैं
रब मेरे मन में ही रहना
तेरी रहमत पर पलते हैं!

मन सबका ही डर जाएगा

मूंदकर अखियां ध्यान लगाना चाहता हूं
अाज एकान्त बस एक ठिकाना चाहता हूं

बन रही है बेबाक रुकावट हर कदम पर
आज ख़ुद को बेआस बनाना चाहता हूं

दिन गुज़रने में देर नहीं लगती ज़रा भी
ज़िंदगी है अब मौत बताना चाहता हूं

मिल सके मंज़िल मीत चले जो साथ पग पर
मैं हसीं ग़म का साथ निभाना चाहता हूं

आज दोराहे पर नैन निहारे राह रब की
बस छुहे जो मन मौज तराना चाहता हूं

जी न पाया पल चैन नहीं मिलता कहीं भी
आज मन में घनश्याम बिठाना चाहता हूं!

अंतर का अवलोकन

अंतर का अवलोकन कर एक नई शुरूआत करें
मानव जीवन सार्थक होगा स्वार्थों का बस घात करें

कुदरत ने संसार सजाया बिन मांगे उपहार दिया
धूप हवा पानी अग्नि मूल्य बिना ही प्राप्त करें

आकाश धरा सूरज सागर पर्वत पौधे पेड़ हरे
अनमोल ख़ज़ाना ईश्वर का कैसे बयां जज़बात करें

प्यार करें हर प्राणी से प्रकृति से भी मेल बने
सरल स्वभाव बनाएं अपना ना कोई आघात करें

सोच विचार करें मिलकर स्वर्ग धरा पर ही ले आएं
इक दूजे से प्यार करे, हल मुश्किल सब हालात करें

दोस्ती कृष्ण सुदामा जैसी ही जीवन में याद रहे
जान लुटा दें इक दूजे पर सुख की बस बरसात करें!

तोहमतें

तोहमतें
इश्क में अनगिनत
जो
तोहमत उठाए
वो आशिक
कहलाए
दुनिया से
किनारा करने वाले
हक़ीक़त से
रूबरू होते है
मीरा ने
हर सुख त्यागा
ईश्वर को पाया
राधा रानी
कृष्ण दीवानी
बनी
जग की रानी
बस
त्यागा
तृष्णाओं को...!

नारी

बसंत ऋतु में
चमन चहके
फूल खिलकर महके
जीवन को निखार मिला
पर निख़ार में
चार चांद तब लगे
जब
मां
बहन
बेटी
पत्नी के दर्पण में
स्वयं को निहारा
कृतज्ञ हो गया
नारी के अदम्य
स्नेह के आत्मिक
आनंद वाले स्पर्श से
और
खो गया
लीन हो गया
प्रेम के असीम आनंद में
बिन आत्मा जीवन शून्य है
नारी आत्मा है
आत्मा ही परमात्मा!

कान्हा

प्रिय कान्हा
तुमने
गीता में ही तो बताया है
कि
तुम सबके
अंतर में बसे हो
फिर मैं तुम जैसी
मधुर बांसुरी
बजाने से महरूम क्यों ?
तुम मेरे अंतर में हो
मेरा सौभाग्य
परन्तु
अपनी सोलह कलाओं में से एक
केवल
मधुर बांसुरी
बजाने की कला सिखा दो
मुझे 'तुम' बना दो
जिससे
प्यार से सराबोर
मधुर बांसुरी
बजाता रहूं निरंतर
और
गोपियों के
निश्छल प्यार में लीन रहूं.....!

वात्सलय

सुत हेतु
मां का वात्सल्य
प्यार की
पौष्टिक शक्ति
केसर, बादाम युक्त
खीर से अधिक
पौष्टिक
अंतर में
एक ही कामना
बस एक
मेरे लाल
मां के प्यार को संवारो
वतन के
वीर बन जाओ
देश भक्ति के
अनमोल इम्तिहान में
अागे आ जाओ
फर्ज़
ममता का निभाना
कर्तव्य मेरा
कामना है मन में
एक ही
तुम भी
कर्तव्य निभाओ
जीवन के

अनमोल उद्देश्य में
सफल हो जाओ
वतन की
आन बान शान को
सजाके
भारत मां के
सिपाही बनकर
अपना
मान बढ़ाओ
हेमू, होशू, भगत सिंह
आज़ाद, बिस्मिल, सुभाष
जैसे
वतन के वीर
कहलाओ
गांधी, विवेकानंद, कलाम
जैसे
स्वार्थ को तिलांजलि दैकर
वतन प्रेम के
दीप जलाओ
मेरे लाल
बस
मेरी यही
एक है इच्छा
सच्चे भारतीय कहलाओ.....!

संस्कृति

वेग विनाशी कशिश है भारी
हंसकर सबने कर ली यारी
पश्चिम की आवारा हवाएं
तोड़ गई संस्कृति हमारी

भूल गये उपकार ज़मीं के
घर के रहे ना और कहीं के
संस्कारों की होली जला दी
रह गये बनकर पात्र हंसी के

बँधन सारे रोगी हो गये
दैनिक वेतन भोगी हो गये
मिलता प्रेम दिहाड़ी पर
शर्म हया भी रोगी हो गये

घर की इज़्जत राहों में
चढ़ गई ओछी निगाहों में
रिश्तों ने खोया विश्वास
आस खो गई चाहों में

शाम सभीकी रंगीं हो गई
चाहे सभ्यता नंगीं हो गई
मांग रही नित गोद नई
चाहत ही भिखमंगी हो गई

सच ईमान अपंग हो गये
आका नंग धड़ंग हो गये
मूंद रखी कानून ने आँखें
माफिया भी मलंग हो गये

ठोकर खाके संभलना आसां
गिरकर उठना चलना आसां
पतन की गहरी खाई में
नहीं धरातल मिलना आसां!

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

जीवन सरलता एवं सुगमता से चल रहा हो, दैनंदिन कार्यों का निपटारा भी हो रहा हो एवं उलझे कार्यों को निपटान में कश्मकश भी चल रही हो। सुबह एवं शाम उठापटक में बीत रहे हों, सुख-दुख साथी बन रहे हों, आराम हेतु रात का आलम अपने आगोश में ले रहा हो, तो व्यस्ता भी असीम आनंद प्रदान करती है। जीवन का वास्तविक सुख देती है।

ऐसा वक्त सदैव चलता रहे तो जीवन स्वर्ग सा लगता है परन्तु कभी कभी अचानक एक यक्ष प्रश्न सामने खड़ा हो जाए तो न उत्तर देते बनता है न टालना। एक आपातकाल सा लगने लगता है, कुछ सूझता नहीं।

आज विश्व में 'कोरोना' ने आपातकाल का कहर बरसाया है, इन्सान की सभी दैनिक गतिविधियों पर अंकुश लगा दिया है। उद्योग, व्यवसाय, रेल, विमान, सड़क यातायात ठप, लोग अपने घरों में कैद हो गये हैं। सभी व्यवसथाएं चरमरा गई हैं। सभी विकास कार्य प्रतिबंधित हो गए है, विकसित राष्ट्रों की अर्थ-व्यवस्था पंगु होने लगी है, विकासशील राष्ट्र वर्तमान से काफी पीछे लुढ़क गये है, और गरीब राष्ट्रों का हाल बयां करना ही मुश्किल है.....

ऐसी विकट परिस्थितियों में आज भारत, अपनी सनातन संस्कृति के बल पर विश्व गुरू बनकर उभरा है। कोरोना महामारी के संक्रमण से जहां समस्त विश्व में मौत का आलम छाया है, भारत सीमित साधनों से मौत पर अंकुश लगाने में सफलता से अग्रसर है।

भारत निश्चित विश्व में एक विशिष्ठ राष्ट्र बनकर उभरेगा और विकास का ऐसा पथ प्रदर्शित करेगा जो मानव कल्याण का मार्ग प्रशस्त करेगा।

रचनाकार
केटी दादलाणी

७०, कम्फर्ट ग्रीन्स, नई जेल के पास,
करौद बाई पास रोड
भोपाल (म.प्र.) ४६२०३८

Email- ktdadlani50@gmail.com
Mobile - 9425602076

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-191-6

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/